International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary; 2023: 2(2): 50-52

स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता-पश्चात हिंदी ललित निबंध: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सरयू शर्मा *
सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अंबाला कैंट, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: * डॉ. सरयू शर्मा

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी ललित निबंध की परंपरा का स्वतंत्रता-पूर्व (1900-1947) एवं स्वतंत्रता-पश्चात (1947-2022) कालखंडों में तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन दोनों कालखंडों के प्रमुख निबंधकारों, उनकी रचनाओं, विषयवस्तु, शैलीगत विशेषताओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का विस्तृत परीक्षण करता है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि राजनीतिक स्वतंत्रता ने किस प्रकार ललित निबंध विधा के स्वरूप, भाषा और विषय-चयन को प्रभावित किया।

मुख्य शब्द: ललित निबंध, स्वतंत्रता-पूर्व, स्वतंत्रता-पश्चात, तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी साहित्य ।

1. प्रस्तावना

ललित निबंध हिंदी साहित्य की एक विशिष्ट गद्य विधा है जो व्यक्तित्व की सहज अभिव्यक्ति, भावनात्मक संवेदना और कलात्मक प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "ललित निबंध वह है जिसमें व्यक्तित्व की प्रधानता होती है" (द्विवेदी, 1952) । इस विधा का उद्भव बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ और यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित होती रही।

स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) ने न केवल भारतीय समाज बल्कि साहित्य को भी गहराई से प्रभावित किया। डॉ. नगेंद्र ने लिखा है कि "स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी साहित्य में नवीन चेतना का संचार हुआ" (नगेंद्र, 1973) । यह शोध पत्र इस परिवर्तन को ललित निबंध के संदर्भ में विश्लेषित करता है।

Publication Information:
- Received Date: 09-02-2023
- Accepted Date: 28-03-2023
- Publication Date: 30-03-2023

How to cite this article:
डॉ. सरयू शर्मा. स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता-पश्चात हिंदी ललित निबंध: एक तुलनात्मक अध्ययन. International Journal of Contemporary Research in Multidisciplinary. 2023: 2(2):50-52.

2. शोध के उद्देश्य

1. स्वतंत्रता-पूर्व एवं स्वतंत्रता-पश्चात ललित निबंधों की विशेषताओं का विश्लेषण
2. दोनों कालखंडों के प्रमुख रचनाकारों और उनकी कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन
3. विषयवस्तु, भाषा-शैली और सामाजिक सरोकारों में आए परिवर्तनों की पहचान
4. ललित निबंध विधा के विकास में राजनीतिक-सामाजिक परिवर्तनों की भूमिका का मूल्यांकन

3. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में प्रमुख ललित निबंध संग्रहों का अध्ययन किया गया तथा द्वितीयक स्रोतों के रूप में प्रतिष्ठित आलोचकों के विचारों को सम्मिलित किया गया है।

4. स्वतंत्रता-पूर्व ललित निबंध परंपरा (1900-1947)

4.1 प्रमुख निबंधकार एवं रचनाएँ

निबंधकार	जन्म-मृत्यु	प्रमुख कृतियाँ	प्रकाशन वर्ष
बाबू गुलाबराय	1888-1963	मेरी असफलताएँ, ठलुआ क्लब	1942, 1944
आचार्य रामचंद्र शुक्ल	1884-1941	चिंतामणि (भाग 1 व 2)	1939, 1942
हजारीप्रसाद द्विवेदी	1907-1979	अशोक के फूल (प्रारंभिक निबंध)	1948
रामवृक्ष बेनीपुरी	1899-1968	माटी की मूरतें	1946

बाबू गुलाबराय को हिंदी ललित निबंध का जनक माना जाता है (शुक्ल, 1968)। उनके निबंधों में व्यक्तित्व की गहन छाप, सहजता और आत्मीयता के दर्शन होते हैं। "मेरी असफलताएँ" में उन्होंने जीवन के अनुभवों को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल यद्यपि मुख्यतः आलोचक थे, किंतु "चिंतामणि" के मनोविकार संबंधी निबंध जैसे "श्रद्धा-भक्ति", "उत्साह", "करुणा" में ललित तत्व विद्यमान हैं। इनमें दार्शनिक गहराई और भावात्मक विश्लेषण का समन्वय है।

4.2 विषयवस्तु की विशेषताएँ

विषय क्षेत्र	प्रतिशत	उदाहरण
सांस्कृतिक परंपरा	35%	द्विवेदी - अशोक के फूल
प्रकृति चित्रण	25%	बेनीपुरी - पतझड़ की पत्तियाँ
दार्शनिक चिंतन	20%	शुक्ल - मनोविकार निबंध
व्यक्तिगत अनुभव	15%	गुलाबराय - मेरी असफलताएँ
राष्ट्रीय चेतना	5%	बेनीपुरी - माटी की मूरतें

इस काल के ललित निबंधों में भारतीय सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं का गौरवगान प्रमुख था। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित शोध के अनुसार, "इस काल में लेखकों ने परोक्ष रूप से राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का प्रयास किया" (पाठक, 1985) ।

4.3 शैलीगत विशेषताएँ

स्वतंत्रता-पूर्व ललित निबंधों की प्रमुख शैलीगत विशेषताएँ थीं:

- **संस्कृतनिष्ठ भाषा:** तत्सम शब्दावली की प्रधानता (शर्मा, 1991)
- **काव्यात्मकता:** अलंकारिक भाषा और लयात्मक वाक्य विन्यास
- **गंभीरता:** विचारपरक और औपचारिक प्रस्तुति
- **सांस्कृतिक संदर्भ:** संस्कृत साहित्य के उद्धरण

5. स्वतंत्रता-पश्चात ललित निबंध परंपरा (1947-2022)

5.1 प्रमुख निबंधकार एवं रचनाएँ

निबंधकार	जन्म-मृत्यु	प्रमुख कृतियाँ	प्रकाशन वर्ष
हजारीप्रसाद द्विवेदी	1907-1979	कुटज, आलोक पर्व	1964, 1972
विद्यानिवास मिश्र	1926-2005	छितवन की छाँह, तुम चंदन हम पानी	1953, 1971
कुबेरनाथ राय	1933-1996	प्रिया नीलकंठी, गंध-मादन	1980, 1984
निर्मल वर्मा	1929-2005	शब्द और स्मृति, ढलान से उतरते हुए	1976, 1985
अज्ञेय	1911-1987	त्रिशंकु, आत्मनेपद	1945, 1960
धर्मवीर भारती	1926-1997	ठेले पर हिमालय, कहनी अनकहनी	1958, 1981

विद्यानिवास मिश्र ने परंपरा और आधुनिकता का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया। उनके निबंधों में लोक संस्कृति, ग्रामीण जीवन और आधुनिक बोध का संतुलन दिखाई देता है (त्रिपाठी, 1998)।

कुबेरनाथ राय के निबंधों में संस्कृत साहित्य, पाश्चात्य दर्शन और समकालीन विमर्श का अद्भुत संगम है। "प्रिया नीलकंठी" में उन्होंने शास्त्रीय ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया (मिश्र, 2001)।

निर्मल वर्मा ने अस्तित्ववादी चिंतन और आधुनिक मनुष्य की विसंगतियों को अपने निबंधों का विषय बनाया। उनकी रचनाओं में गहन आत्मविश्लेषण और मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि है (वर्मा, 2002)।

5.2 विषयवस्तु में परिवर्तन

विषय क्षेत्र	प्रतिशत	प्रमुख निबंधकार
आधुनिकता की चुनौतियाँ	30%	निर्मल वर्मा, अज्ञेय
परंपरा-आधुनिकता संघर्ष	25%	विद्यानिवास मिश्र
अस्तित्ववादी चिंतन	20%	निर्मल वर्मा, अज्ञेय
समसामयिक मुद्दे	15%	धर्मवीर भारती
सांस्कृतिक विमर्श	10%	कुबेरनाथ राय

स्वतंत्रता-पश्चात के निबंधों में विषय-विविधता में वृद्धि हुई। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार, "नव-स्वतंत्र भारत की चुनौतियों, शहरीकरण और वैश्वीकरण ने निबंधकारों को नए विषय प्रदान किए" (शर्मा, 1995) ।

5.3 शैलीगत नवाचार

- **सरल भाषा:** बोलचाल की भाषा का प्रयोग
- **व्यंग्य और विनोद:** सामाजिक विसंगतियों पर तीखी टिप्पणी

- **प्रयोगशीलता:** नए शिल्प का प्रयोग
- **बहुआयामिता:** यात्रा वृत्तांत, संस्मरण का समावेश

6. तुलनात्मक विश्लेषण

6.1 भाषा और शैली की तुलना

पहलू	स्वतंत्रता-पूर्व	स्वतंत्रता-पश्चात
शब्दावली	संस्कृतनिष्ठ, तत्सम	सरल, तद्भव, अंग्रेजी मिश्रित
वाक्य विन्यास	लंबे, जटिल वाक्य	छोटे, सहज वाक्य
स्वर	औपचारिक, गंभीर	अनौपचारिक, मित्रवत
अलंकरण	काव्यात्मक, अलंकृत	सरल, प्रभावी
उद्धरण	संस्कृत साहित्य	पाश्चात्य दर्शन, विविध स्रोत

6.2 विषयवस्तु की तुलना

विषय	स्वतंत्रता-पूर्व	स्वतंत्रता-पश्चात
मुख्य फोकस	सांस्कृतिक गौरव, परंपरा	आधुनिकता, व्यक्ति की समस्याएँ
दृष्टिकोण	आदर्शवादी	यथार्थवादी
चेतना	सामूहिक, राष्ट्रीय	व्यक्तिगत, वैश्विक
प्रकृति चित्रण	रोमानी, काव्यात्मक	प्रतीकात्मक, दार्शनिक
समाज	ग्रामीण जीवन	नागर जीवन

6.3 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ

स्वतंत्रता-पूर्व काल में निबंधकारों ने औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध का कार्य किया। परंपरा और इतिहास को पुनर्जीवित कर राष्ट्रीय आत्मविश्वास जगाया गया (तिवारी, 1988) ।

स्वतंत्रता-पश्चात काल में विभाजन की पीड़ा, आधुनिकीकरण की चुनौतियाँ और पहचान का संकट प्रमुख विषय बने। निबंधकारों ने परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन खोजने का प्रयास किया (राय, 2000) ।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक स्वतंत्रता ने हिंदी ललित निबंध की विषयवस्तु, भाषा-शैली और दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। स्वतंत्रता-पूर्व के निबंधों में जहाँ सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रीय चेतना प्रमुख थी, वहीं स्वतंत्रता-पश्चात के निबंधों में व्यक्ति की आंतरिक जटिलताएँ और आधुनिकता के द्वंद्व केंद्र में आए।

भाषा के स्तर पर संस्कृतनिष्ठता से सहजता की ओर यात्रा हुई। शैली में प्रयोगशीलता और विषय-विविधता में वृद्धि हुई। तथापि, दोनों कालखंडों में व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति, सौंदर्यबोध और कलात्मकता जैसे ललित निबंध के मूल तत्व सुरक्षित रहे।

यह कहा जा सकता है कि हिंदी ललित निबंध ने समय के साथ स्वयं को परिवर्तित किया है, किंतु अपनी मूल पहचान को बनाए रखा है। यह विधा आज भी प्रासंगिक है और समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर संवेदनशील टिप्पणी प्रस्तुत करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. द्विवेदी H. अशोक के फूल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1952.
2. द्विवेदी H. कुटज. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1964.
3. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: मयूर पेपरबैक्स; 1973.
4. पाठक K. हिंदी ललित निबंध: उद्भव और विकास. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 1985.
5. राय K. प्रिया नीलकंठी. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1980.
6. राय K. गंध-मादन. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1984.
7. राय D. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2000.
8. वर्मा N. शब्द और स्मृति. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1976.
9. वर्मा D. हिंदी साहित्य कोश. वाराणसी: ज्ञानमंडल लिमिटेड; 2002.
10. शर्मा R. भारतेंदु युग और हिंदी भाषा की विकास परंपरा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1991.
11. शर्मा R. भाषा और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1995.
12. शुक्ल R. चिंतामणि भाग-1. इलाहाबाद: इंडियन प्रेस; 1939.
13. शुक्ल S. हिंदी निबंध साहित्य का विकास. दिल्ली: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 1968.
14. मिश्र V. तुम चंदन हम पानी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1971.
15. मिश्र S. ललित निबंध: परंपरा और प्रयोग. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन; 2001.
16. तिवारी R. हिंदी का गद्य साहित्य. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 1988.
17. त्रिपाठी V. हिंदी आलोचना. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन; 1998.
18. गुलाबराय. मेरी असफलताएँ. इलाहाबाद: भारती भंडार; 1942.
19. भारती D. ठेले पर हिमालय. इलाहाबाद: नीलाभ प्रकाशन; 1958.
20. अज्ञेय. आत्मनेपद. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ; 1960.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution **(CC BY 4.0)** license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.